तय्यब सालिह

उत्तर की ओर गमन का मौसम

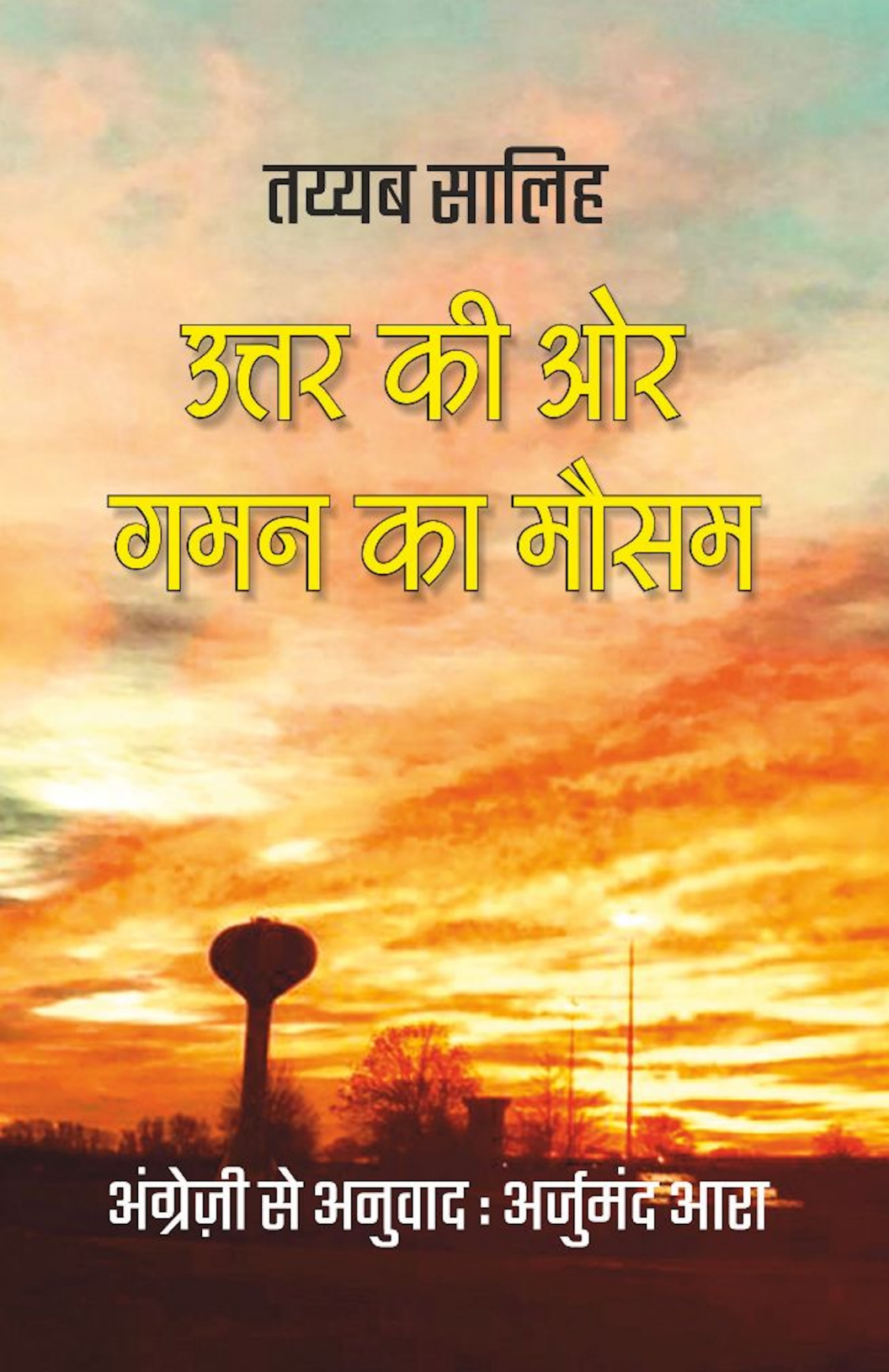

अंग्रेज़ी से अनुवाद : अर्जुमंद आरा

उत्तर की ओर गमन का मौसम

उत्तर की ओर गमन का मौसम

(सूडानी उपन्यास)

तय्यब सालिह

अनुवादक

अर्जुमंद आरा

अनुज्ञा

मूल कृति : *मौसिम-उल-हिज्रा इलश-शमाल* (सूडानी/अरबी, 1966)

Season of Migration to the North (1969) by *Tayeb Salih*
अनुवादक : डेनिस जॉनसन डेवीज़

उर्दू अनुवाद : शुमाल की जानिब हिज्रत का मौसम, 2016 अनुवादक : अर्जुमंद आरा

हिन्दी अनुवाद : उत्तर की ओर गमन का मौसम अनुवादक : अर्जुमंद आरा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© अर्जुमंद आरा

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19019-28-1

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण : राधेश्याम

मुद्रक : अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

UTTAR KI OR GAMAN KA MAUSAM *by* **Tayeb Salih**
***Hindi Translation by* Arjumand Ara**

उत्तर की ओर गमन का मौसम

1

सज्जनो! बहुत लम्बी अनुपस्थिति के बाद मैं अपने लोगों के बीच लौटा हूँ–पूरे सात साल के अन्तराल के बाद, जिसके दौरान में मैं यूरोप में पढ़ रहा था। बहुत कुछ पढ़ा और बहुत कुछ भूल गया। लेकिन वह एक दूसरी ही कहानी है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैं अपनों से मिलने की तीव्र इच्छा मन में लिए नील के मोड़ पर स्थित इस छोटे से गाँव में लौटा हूँ। सात वर्ष तक मैं उनके लिए तड़पता रहा और उन्हें अपने सपनों में देखता रहा। वह क्षण मेरे लिए अहम था जब मैंने वास्तव में ख़ुद को उनके सामने खड़े पाया। मुझे अपने साथ पाकर वे लोग झूम उठे और ग़ुल-ग़पाड़ा मचाने लगे, और ज़रा ही देर में मुझे यूँ लगने लगा जैसे मेरे अन्दर बर्फ़ का एक टुकड़ा था जो पिघलने लगा है, कोई जमी हुई चीज़ थी जिस पर सूरज चमक उठा है। यह हमारे क़बीले की जीवन से ओत-प्रोत हरारत थी जिसे मैं एक मुद्दत पहले उस देश में खो चुका था "जहाँ मछलियाँ ठंड से मर जाती हैं।" मेरे कानों में इनकी आवाज़ें गूँजती थीं, मेरी आँखें इनकी छवि देखती थीं। चूँकि इनकी अनुपस्थिति में मैं इनके बारे में अत्यधिक सोचता था इसलिए जिस पल मैंने इनको सामने पाया तो मेरे और इनके बीच धुंध की एक चादर सी तन गयी। लेकिन धुँध छंटी, और लौटने के बाद दूसरे दिन अपने कमरे के चिर-परिचित बिस्तर पर मेरी आँख खुली–उस कमरे में जिसकी दीवारें मेरे बचपन और लड़कपन की छोटी-मोटी घटनाओं की गवाह थीं। मैंने हवाओं के स्वर को ध्यान से सुना। इस स्वर से मैं निश्चय ही भली भाँति परिचित था, जो हमारे गाँव में चंचल सरगोशी जैसी लगती थी। खजूर के पेड़ों से यह गुज़रती हुई आवाज़ उस समय कितनी बदल जाती है जब मकई के खेतों से गुज़रती है। कोयल की कूक कान में पड़ी, और मैंने खिड़की से परे आँगन में लगे खजूर के पेड़ की ओर देखा और समझ गया कि यहाँ अभी सब कुशल मंगल है। मैंने उसके मज़बूत और सीधे तने को देखा, फिर उसकी जड़ों को जो ज़मीन में गहरी

पेवस्त हो गयी थीं, और फिर उसकी हरी-भरी डालियों को देखा जो उन्मुक्त भाव से झुकी पड़ रही थीं। और मैंने सन्तोष की साँस ली। मुझे लगा कि मैं आँधी में उड़ता हुआ कोई तिनका नहीं बल्कि खजूर का पेड़ हूँ, एक ऐसा प्राणी हूँ जिसका एक आधार है, जड़ें हैं, उद्देश्य है।

अम्मी चाय ले आयीं। अब्बा, जो नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने से फ़ारिग़ हो चुके थे, अम्मी के साथ ही अन्दर चले आये। फिर मेरी बहन आयी, और भाई भी आ गया, और हम सब बैठ कर चाय पीने के साथ-साथ बातें करने लगे, जैसा कि हम उन दिनों से ही करते आये हैं जब से मैंने होश सँभाला था। हाँ, जीवन मैं सब कुछ भला-भला है, और दुनिया में कोई बदलाव नहीं आया है।

अचानक मुझे याद आया कि जो लोग मेरे स्वागत के लिए आये थे उनमें एक चेहरा ऐसा भी था जिससे मैं परिचित नहीं था। मैंने उसके बारे में पूछा और उसका हुलिया बताया : औसत क़द का आदमी, उम्र कोई पचास साल या कुछ अधिक। बाल घने और सफ़ेदी लिए हुए, दाढ़ी सफ़ाचट, और मूँछें उससे थोड़ी छोटी जितनी गाँव के लोग आमतौर पर रखते हैं। एक सुन्दर पुरुष।

"वह मुस्तफ़ा था।" अब्बा ने जवाब दिया।

यह मुस्तफ़ा कौन था? क्या हमारे गाँव के उन लोगों में से है जो विलायत चले गये थे, और अब लौटने लगे हैं?

अब्बा ने बताया कि मुस्तफ़ा स्थानीय आदमी नहीं बल्कि अजनबी है जो पाँच साल पहले यहाँ आया था। उसने अपने लिए खेत ख़रीदे, घर बनाया और बिन्ते महमूद से शादी की–वह ऐसा व्यक्ति है जो अपने बारे में किसी से बात नहीं करता और जिसके बारे में लोग अधिक नहीं जानते।

पता नहीं किस बात ने मेरी जिज्ञासा को हवा दी थी, लेकिन मुझे यह याद रह गया था कि मेरे आगमन के दिन वह व्यक्ति चुप था। सब लोग मुझसे यूरोप के बारे में पूछ कर रहे थे। क्या वहाँ लोग हम जैसे हैं या हम से अलग? वहाँ महँगाई या मंदी? लोग सर्दियों में क्या करते हैं? कहते हैं वहाँ औरतें बेपर्दा रहती हैं और मर्दों के साथ खुलेआम नाचती हैं। वद रईस ने पूछा, "क्या यह सच है कि वहाँ लोग शादी नहीं करते बल्कि आदमी औरत के साथ पाप भरा जीवन बिताते है?"

अपनी क्षमता के अनुसार मैंने उनके ढेरों सवालों के जवाब दिये। जब मैंने उन्हें यह बताया कि मामूली अन्तर को छोड़कर यूरोपीय लोग भी हम जैसे ही